RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.

वर्ष: 72 अंक : 20

सृष्टि संवत् 1960853116

16 अगस्त 2015

दयानन्दाब्द 189

वार्षिक : 100 रू.

आजीवन : 1000 रू.

दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 20, 13/16 अगस्त 2015 तदनुसार 31 श्रावण सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आर्य जगत् के महान् सन्यासी- स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती

-श्री सुदर्शन शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब-जालन्धर

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी और महर्षि दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज आर्य जगत् की महान् विभूति थे। उन्होंने अपने कार्यों के द्वारा समाज में एक अलग पहचान बनाई है। स्वामी जी महाराज का जन्म 5 मई 1937 को हुआ था। इनका बचपन का नाम रमेश था। बचपन से ही उनके अन्दर देश के लिए, समाज के लिए कुछ करने की तमन्ना थी, इसलिए उन्होंने छोटी आयु में ही घर छोड़ दिया। दयानन्द मठ दीनानगर में रहकर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सानिध्य में रहकर वैदिक सिद्धान्तों की दीक्षा ली। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने सन्यास की दीक्षा देकर इन्हें सुमेधानन्द नाम दिया। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने हिमाचल प्रदेश के चम्बा जिले में एक मठ की स्थापना की थी जिसके लिए उन्हें एक सुयोग्य सन्यासी की आवश्यकता थी। उन्होंने कई सन्यासियों को वहां भेजा पर कोई सफल नहीं हो सका। सन् 1975 में स्वामी सर्वानन्द जी ने स्वामी सुमेधानन्द जी को महर्षि दयानन्द मठ चम्बा भेजा। यहीं से स्वामी जी के सामाजिक जीवन की शुरूआत हुई और स्वामी जी ने चम्बा जैसे दुर्गम और पहाड़ी क्षेत्र में अपनी गतिविधियों का विस्तार किया। अनेक कठिनाईयों का सामना करते हुए भी स्वामी जी कभी घबराए नहीं। जो वचन वे अपने गुरू स्वामी सर्वानन्द जी को देकर आए थे उस वचन को पूरा करने के लिए उन्होंने अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। महर्षि दयानन्द मठ चम्बा को उन्होंने समस्त आर्य जगत् के लिए एक दर्शनीय स्थान बना दिया। रावी नदी के तट पर स्थित यह मठ प्राकृतिक सौदर्य से भरपूर है। कल-कल की ध्वनि करती हुई रावी नदी और वेद मन्त्रों की ध्वनियों से यहां का वातावरण सभी के मन को मोह लेता है। महर्षि दयानन्द के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की। शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी जी ने चम्बा के क्षेत्र में नया आयाम स्थापित किया। दयानन्द मठ चम्बा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय ने अपनी विशेष शिक्षा पद्धति के द्वारा अपनी अलग पहचान स्थापित की है। समाज सेवा के क्षेत्र में उन्होंने दयानन्द मठ चम्बा में निशुल्क मैडीकल कैम्पों का आयोजन किया। हर तीन महीने के बाद महर्षि दयानन्द मठ चम्बा में नि:शुल्क आई कैम्प का लगाया जाता है जहां पर चम्बा क्षेत्र के लोग ईलाज करवाकर लाभ उठाते हैं। स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने हिमाचल प्रदेश के साथ-साथ पंजाब को भी अपना कार्यक्षेत्र बनाया। महर्षि दयानन्द मठ चम्बा को स्वामी जी ने यज्ञभूमि के नाम से प्रसिद्ध कर दिया। स्वामी जी ने मठ में बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन किया। मठ की भव्य यज्ञशाला के उद्घाटन अवसर पर डेढ़ वर्ष तक चलने वाले गायत्री महायज्ञ का अनुष्ठान किया। पिछले पन्द्रह वर्षों से हर वर्ष मठ की यज्ञशाला में ऋग्वेद में वर्णित शारद यज्ञ का आयोजन किया। सन् 2005 में ऐतिहासिक नौ दिन और नौ रात का लगातार दीर्घ सत्र तक चलने वाला शारद यज्ञ किया। स्वामी सुमेधानन्द जी के द्वारा किए गए कार्यों के द्वारा लोगों की मठ के प्रति बहुत आस्था है। स्वामी जी महाराज सौम्यता, परोपकार तथा दया की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने अपना सारा जीवन समाज सेवा के लिए समर्पित किया। 5 अगस्त 2015 को स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के निधन से समस्त आर्य जगत् के शोक की लहर दौड़ गई। स्वामी जी पिछले कुछ समय से बीमार चल रहे थे। महर्षि दयानन्द मठ चम्बा में उन्होंने अपने जीवन की अन्तिम सांस ली। स्वामी जी के निधन से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। स्वामी जी का अन्तिम संस्कार महर्षि दयानन्द मठ चम्बा के पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य शिक्षण संस्थाओं और पंजाब की समस्त आर्य समाजों की ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करता हूं।

वसोर्धारामन्त्रः

-ले० पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री, 4-E, कैलाश नगर, फाजिल्का

ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।। -यजु. 1/13

परम पिता परमात्मा का उपदेश है-हे मनुष्य! यज्ञो वै वसुः।। शतपथ 1।7।1।9,14

यहां पर वसु का अर्थ यज्ञ है। 'वासयति इति' व्युत्पत्ति से यह ठीक भी है क्योंकि यज्ञ ही बसाता है। यज्ञ के अभाव में नाश ही नाश है।

नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः।।

यज्ञहीन का न यह लोक है, न परलोक।।

वस्तुतः इस यज्ञ के द्वारा ही मनुष्य के जीवन का सुन्दर निर्माण होता है। यज्ञ से (पवित्रम् असि) तूने स्वयं को पवित्र बनाया है। (शतधारम्) (शतं धारा यस्मिन्-धारा इति वाङ्नाम) जिस यज्ञ द्वारा पवित्रीकरण की क्रिया में शतशः वेदवाणियों का उच्चारण किया गया है। सैंकड़ों ही क्या (सहस्त्रधारम्) सहस्त्रों वेदवाणियों का उच्चारण हुआ है। ऐसी यज्ञ की प्रक्रिया से (पवित्रम् असि) तूने अपने को पवित्र बनाया है।

आध्यात्मिक पक्ष-(सविता देवः) सबको प्रेरणा देने वाला, दिव्यगुणों का भण्डार वह प्रभु (त्वा पुनातु) तुम्हें पवित्र करे।

लौकिक पक्ष-(सविता देवः) सबको कर्मों में प्रेरित करने वाला प्रकाशमय सूर्य (त्वा पुनातु) तुम्हें पवित्र करे अर्थात् यह सूर्य रोगकृमियों का संहार करके पवित्रता, नीरोगता एवं नवचेतना का संचार करे।

(वसोः) यज्ञ से (पवित्रेण) अपने को पवित्र बनाने वाले (शतधारेण) शतशः वेदवाणियों का उच्चारण करने वाले पुरुष के साथ (सुप्वा) तू अपने को उत्तम प्रकार से (सु) पवित्र करने वाला (यू) हुआ है।

परमात्मा का उपदेश है कि वस्तुतः (काम्) उस अवर्णनीय आनन्द देने वाली वेदवाणी को तो तूने ही (अधुक्षः) दुहा है।

वैदिक संस्कृति के अनुसार मनुष्य यज्ञमय जीवन बिताता है। इस यज्ञमय जीवन की प्रेरणा उसे शतशः, सहस्रशः उच्चारण की गई वेदवाणियों से प्राप्त होती है। जिन्हें वह अपने इस यज्ञमय जीवन में समय-समय पर प्रयुक्त करता है।

विचारणीय शब्द शतधारम् एवं सहस्त्रधारम्-'शत' का अर्थ-सौ तथा असंख्य है।

(संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुम पृष्ठ-1133)

इस आधार पर अर्थ हुआ-सौ धाराएं अथवा असंख्य धाराएं अर्थात् जिनकी गिनती ही नहीं की गई। जब धाराओं की गिनती ही नहीं की गई तो उस पर टीका-टिप्पणी करना ही व्यर्थ है।

'सहस्त्र' का अर्थ हजार एवं बहुसंख्य है। (सं.श.कौ.पृ.1243)

सहस्त्र का अर्थ हुआ बहुत सी धाराएं। यहां पर भी कोई निश्चित संख्या नहीं है। बस बहुत सी धाराएं हैं।

इससे भी सिद्ध होता है कि धाराओं का एक समूह बना कर अर्थात् बड़ी मोटी धार बना कर घी डालें। जब छोटे चम्मच से घी डालते हैं तो छोटी अर्थात् पतली धार बनती है। जब घृतपात्र से डालेंगे तो सम्भवतः बड़ी अर्थात् मोटी धार बनेगी।

अलग-अलग धाराएं बनाना अथवा उनकी सौ और हज़ार की गणना करना कोई बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य नहीं। अपितु असंख्य तथा बहुसंख्य अर्थ करना ही उपयुक्त है।

अनेक याज्ञिक विद्वान् 'शतधारम्' और 'सहस्त्रधारम्' शब्दों के आधार पर खड़े होकर छानने में से घृत की धारा डलवाते हैं। परन्तु उस छानने से भी सौ धाराएं नहीं बन पातीं अपितु वे सभी मिलकर एक बड़ी धारा में परिवर्तित हो जाती हैं, फिर हज़ार धाराओं की तो बात ही क्या है ? अतः इस प्रकार की पद्धति अनौचित्यपूर्ण और अप्रशस्य है। सौ या हजार धाराओं की कल्पना करके आहुति देना और दिलवाना कल्पनालोक में विचरण करना ही है।

शतधारम् तथा सहस्त्रधारम् का समास विग्रह

शतशः धाराणां समाहारः शतधारम्।

सहस्त्रशः धाराणां समाहारः सहस्त्रधारम्।

इस प्रकार यह दोनों शब्द समूह वाचक हैं। सौ अथवा हजार के निश्चित संख्यावाची नहीं, अपितु सैंकड़ों और हजारों के समूह के बोधक हैं।

अतः जो याज्ञिक इस मन्त्र से आहुति देना चाहते हैं उन्हें चाहिए कि यज्ञान्त में जिस पात्र में घी है उसी पात्र से खड़े होकर अथवा बैठे-बैठे ही हाथ ऊंचा करके वसोर्धारा मन्त्र का उच्चारण करते हुए धार बना कर घृतपात्र का सारा घी समर्पित कर दें।

खड़े होकर, हाथ ऊंचा करके घी डालने का अभिप्राय यही है कि हाथ को आंच न लगे। क्योंकि घी की धार बड़ी होने से अग्नि तीव्रता से प्रदीप्त हो जाती है, जिससे हाथ जलने का डर रहता है। यदि घृतपात्र में थोड़ा ही घी बचा है तो बैठे-बैठे ही धार बना कर डाल सकते हैं। यह सुविधा पर निर्भर है। बात का बतंगड़ बनाने में कोई औचित्य नहीं।

आचार्य श्रीराम शर्मा के अनुसार-

घृत की अन्तिम बड़ी आहुति वसोधारा है। घृत अर्थात् स्नेह-सौजन्य। घृत की धारा अर्पित करते हुए यही कामना की जाती है कि सभी मनुष्यों में परस्पर स्नेह सौजन्य की धारा निरन्तर बहती रहे।

वसोर्धारा में अविच्छिन्न धारा प्रवाहित की जाती है और अधिक घृत होमा जाता है। इसका उद्देश्य यही है कि शुभकार्यों के आरम्भ में जितना उत्साह होता है, अन्त में उससे भी कहीं अधिक होना चाहिए।

प्रायः शुभकार्यों के आरम्भ में लोग बहुत साहस, उत्साह और त्याग दिखाते हैं परन्तु बाद में ढीले पड़ जाते हैं। इसके वपरीत मनस्वी लोगों की रीति दूसरी ही है। यदि वे धर्म मार्ग पर कदम बढ़ा रहे हैं तो हर कमद पर तेज़ी का परिचय देते हैं और याज्ञिक कर्म में अत्याधिक तन्मय हो जाते हैं। ठीक ही कहा है-

मनस्वी कार्यार्थो न गणयति दुःखं न च सुखम्।।

लक्षित कार्य को सिद्ध करने वाला मनस्वी व्यक्ति दुःख या सुख की परवाह नहीं करता।

राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन

राष्ट्रीय आर्य युवक परिषद का 37वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन रविार 6 सितम्बर 2015 को प्रातः 9:00 बजे से सांय 4:00 बजे तक स्वामी श्रद्धानन्द सामुदायिक केन्द्र केशव मार्ग, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के भव्य सभागार में बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। आप सभी इस सम्मेलन में सादर आमन्त्रित हैं। आपसे प्रार्थना है कि आप अपना सहयोग अवश्य दें।

आर्य समाज सिरकी बाजार बठिंडा का चुनाव

आर्य समाज सिरकी बाजार बठिंडा का चुनाव दिनांक 26-07-2015 को आर्य समाज के मन्त्री श्री भगवान दास छाबड़ा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस दौरान सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारियों को चुना गया-संरक्षक-श्री बलदेव राज छाबड़ा, प्रधान-श्री भगवान दास छाबडा, उपप्रधान-श्री राहुल मल्होत्रा, श्रीमती उर्मिला देवी, महामन्त्री-श्री विद्याधर जी, मन्त्री- श्री सुन्दर पाल जी, उपमन्त्री-श्रीमती कृष्णा कुमारी कोषाध्यक्ष श्री प्रवीण छाबड़ा, प्रचार मन्त्री-श्री गगन शर्मा को चुना गया। **-महामन्त्री आर्य समाज सिरकी बाजार बठिंडा**

सत्यार्थ प्रकाश का 18 वां भव्य महोत्सव

प्रातः स्मरणीय राणा प्रताप के शौर्य की गाथा से महिमामण्डित , भक्ति, शौर्य तथा अध्यात्म के भावों से आप्लावित इस नगरी में आयोज्य 18वें भव्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन 31 अक्तूबर 2015 से 2 नवम्बर 2015 तक किया गया है। इस अवसर पर विश्वभर के भाई बहिन आमन्त्रित हैं। इस अवसर पर अनेक सन्यासीवृन्द, वेद प्रवक्ताओं और भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है।

सम्पादकीय.....

स्वामी सुमेधानन्द जी का निधन-आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति

आर्य जगत् के पूजनीय स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का निधन आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रति समर्पित रहा। जन-जन को लाभ पहुंचाने वाले यज्ञ जैसे पवित्र और श्रेष्ठ कर्म को उन्होंने लोगों के लिए रोचक बना दिया। स्वामी जी के अन्दर यज्ञ के प्रति बहुत श्रद्धा और निष्ठा थी। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने ऐसे समय में स्वामी सुमेधानन्द जी को दयानन्द मठ चम्बा में भेजा जिस समय वहां पर बीहड़ जंगल हुआ करता था। लोग दिन में उस जगह जाने से डरते थे। 1975 में जब स्वामी जी चम्बा में गए तो वहां पर साधन बहुत सीमित थे। परन्तु स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपने पुरूषार्थ से जंगल में मंगल कर दिया। स्वामी जी ने किसी बात की चिन्ता किए बिना केवल एक परमात्मा पर विश्वास रखा। परमात्मा की कृपा से लोग उनके व्यक्तित्व को देखकर प्रभावित हुए और उनके साथ जुड़ते गए। साधन बढ़ने के साथ-साथ स्वामी जी ने मठ की गतिविधियों का विस्तार किया। जिस दृढ़ निश्चय को और स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का आशीर्वाद लेकर वो चम्बा आए थे उसे उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में निभाया। अपने गुरू को दिए गए वचन का उन्होंने पालन किया। कठिनाइयों, मुसीबतों का सामना करते हुए भी स्वामी जी अपने लक्ष्य पर अड़िग रहे। स्वामी जी महाराज के जीवन पर भर्तृहरि जी महाराज का यह नीति श्लोक पूर्ण रूप से सार्थक होता है-

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

नीति निपुण लोग निन्दा करे या प्रशंसा, धन आए अथवा जाए , आज ही मृत्यु हो या युगों के बाद। जो धीर और पुरूषार्थी लोग होते हैं वे अपने न्याय के, धर्म के मार्ग को नहीं छोड़ते हैं।

स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज का जीवन भी ऐसा ही जीवन था। उन्होंने कभी भी साधनों की परवाह नहीं की। बिना साधनों के भी उन्होंने बड़े- बड़े कार्यों को प्रारम्भ किया और परमात्मा की कृपा से वे कार्य पूर्ण भी हुए। फिर वे चाहे बड़े-बड़े दीर्घ यज्ञ हों या फिर निशुल्क मैडीकल कैम्प। स्वामी जी ने मठ की गतिविधियों में साधनों की कमी को आड़े नहीं आने दिया। उनके जीवन का एक दृढ़ और सत्य सिद्धान्त यह था कि वे जिस संकल्प को एक बार कर लेते थे, उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। चम्बा जैसे दुर्गम और पहाड़ी क्षेत्र में उन्होंने मठ की गतिविधियों का बहुत विस्तार किया।

प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित महर्षि दयानन्द मठ चम्बा का स्थान बहुत ही दर्शनीय है। एक ओर रावी नदी की कल- कल करती ध्वनि गूंजती है तो दूसरी ओर मठ की यज्ञशाला में वेद मन्त्रों की ध्वनियां गूंजती हैं। बीहड़ और निर्जन स्थान को स्वामी जी और उनके शिष्य आचार्य महावीर सिंह जी ने एक यज्ञतीर्थ के रूप में परिवर्तित कर दिया। आचार्य महावीर सिंह जी ने स्वामी जी के आदेशों का पालन करते हुए अपने आपको पूर्ण रूप से मठ के कार्यों के प्रति समर्पित कर दिया। स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने जो संकल्प लिया, उसकी पूर्ति में आचार्य महावीर जी का पूर्ण सहयोग रहा। उनका सारा परिवार दिन-रात मठ की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहा।

स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज की यज्ञों के प्रति बहुत श्रद्धा थी। उन्होंने अपने जीवनकाल में बहुत बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन किया। मठ को यज्ञभूमि के रूप में प्रसिद्ध कर दिया। यज्ञों की ख्याति को सुनकर देश के अलग-अलग प्रान्तों से लोग यहां पर आते थे और यहां का यज्ञमय वातावरण, स्वामी जी महाराज के दर्शन और मठ को देखकर अभिभूत हो जाते थे। इन सभी कार्यों के अलावा स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय और महर्षि दयानन्द आदर्श उच्च विद्यालय की स्थापना की। जिस प्रकार की शिक्षा और संस्कार यहां पर बच्चों को दिए जाते हैं उसी का परिणाम है कि आज यह विद्यालय दिन-प्रतिदिन उन्नति कर रहा है और शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। स्वामी जी महाराज ने हिमाचल के साथ-साथ पंजाब में भी आर्य समाज का प्रचार किया। स्वामी जी ने देश के विभिन्न भागों में घूम कर महर्षि दयानन्द के संदेश को फैलाया। स्वामी जी महाराज ने अपने जीवन में कभी भी सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया। सत्य के पक्ष में वे हमेशा अड़िग रहे।

स्वामी सुमेधानन्द जी के निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत् को हानि हुई है। स्वामी जी के रूप में हमने एक मार्गदर्शक खो दिया है। आर्य जगत् में उनकी कमी को पूरा नहीं किया जा सकता। स्वामी जी एक महान् आत्मा थे। समय-समय पर स्वामी जी हम सबका मार्गदर्शन करते रहते थे। उन्होंने आर्य समाज की एकता पर बल दिया और उसके लिए प्रयास करते रहे। स्वामी जी हम सबके लिए पूजनीय थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उनके निधन पर गहरा दुख व्यक्त करती है। हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य विद्या परिषद पंजाब एवं पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की तरफ से स्वामी सुमेधानन्द जी को हार्दिक श्रद्धाजंलि अर्पित करते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और अपने चरणों में स्थान दे। आर्य जगत् में उनके निधन से जो क्षति हुई है परमात्मा उसकी पूर्ति करे। दयानन्द मठ चम्बा को स्वामी जी के निधन से जो हानि हुई है परमात्मा उसे पूरा करने में सहायक बने। दुख की इस घड़ी में हम सभी मठ के साथ हैं और स्वामी जी के द्वारा प्रारम्भ की गई गतिविधियों में यथासम्भव सहयोग करते रहेंगे।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर

आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर के तत्वावधान में जनसहयोग से 68 वां नि:शुल्क चिकित्सा एवं जांच शिविर स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्माथ हॉस्पिटल में 12 जुलाई 2015 रविवार को प्रात: 9:30 से 12:30 तक लगाया गया। इस चिकित्सा शिविर में 300 रोगियों की जांच की गई। स्वामी अमरमुनि ने यज्ञ के महत्व को बताते हुए आर्य जन को यज्ञ दैनिक जीवन में अपनाने एवं पर्यावरण शुद्धि हेतु निरन्तर प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया। निरंजन लाला डाटा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला तथा पं. हेतराम आर्य सभागार में बन रही आर्ट गैलरी हेतु 1 लाख रूपये देने की घोषणा की।

मैं ब्रह्म नहीं अपितु एक जीवात्मा हूं

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला रोड, देहरादून

मैं कौन हूं ? यह प्रश्न कभी न कभी हम सबके जीवन में उत्पन्न होता है। कुछ उत्तर न सूझने के कारण व अन्य विषयों में मन के व्यस्त हो जाने के कारण हम इसकी उपेक्षा कर विस्मृत कर देते हैं। हमें विद्यालयों में जो कुछ पढ़ाया जाता है। उसमें भी यह विषय व इससे सम्बन्धित ज्ञान सम्मिलित नहीं है। इसका कारण यह है कि जिन लोगों के धर्मग्रन्थों में इस प्रश्न का यथार्थ उत्तर नहीं है। वह इसके अध्ययन को साम्प्रदायिकता कह कर विरोध शुरू कर देते हैं। अत: सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न होने पर भी यह अधिकांश के लिए सारा जीवन विस्मृत, उपेक्षित व अनुत्तरीय ही बना रहता है। अद्वैतवाद के मानने वाले लोग यदा-कदा यह भ्रम फैलाते रहते हैं कि जीवात्मा ब्रह्म अर्थात् ईश्वर का अंश व साक्षात् ब्रह्म ही है। उनके अनुसार इस सारे संसार में केवल एक ही सत्ता है और वह ईश्वर है। हमें आंखों से जो संसार दिखाई देता है, वह स्वप्नवत् है, यथार्थ नहीं है। उनके अनुसार आंखों से दिखने व अनुभव होने वाले संसार का अस्तित्व ही नहीं है। जीवात्मा को जब ज्ञान हो जाएगा तो वह ईश्वर में मिल जाएगा अर्थात् उसका अस्तित्व ईश्वर में विलीन होकर वह ईश्वर हो जाएगा। यह बात कहने में तो अच्छी दिखाई दे सकती है परन्तु यह सत्य नहीं है। हम निभ्रान्त रूप से अनुभव करते हैं कि हम एक चेतन सत्ता है। हमें सुख व दु:ख की अनुभूति होती है। जिसे सुख व दुख की अनुभूति होती है वह चेतन सत्ता होती है। इस प्रकार से संसार में पशु, पक्षी, कीट व पतंग आदि नाना प्रकार के सभी प्राणी एक चेतन तत्व 'जीवात्मा' से सम्बद्ध हैं। जब तक जीवात्मा उन उन प्राणियों के शरीरों में होती है, तब तक वह जीवित रह कर अपने अपने कर्म करते हैं, जीवात्मा के पृथक होने पर उनकी मृत्यु हो जाती है और उनके शरीर कारण तत्व अर्थात् पंच तत्वों में विलीन हो जाते हैं।

चेतन व जड़ दो प्रकार के पदार्थ हमें संसार में दिखाई देते हैं। भौतिक पदार्थ मूल तत्त्व प्रकृति के विकार हैं। यह भौतिक पदार्थ चेतन न होकर जड़ है। जड़ पदार्थों को सुख व दु:ख तथा अच्छा व बुरे की प्रतीति नहीं होती। न्याय दर्शन के अनुसार आठ प्रमाणों से परीक्षा करने पर प्रकृति चेतन तत्व से पृथक एक जड़ तत्व निश्चित व सिद्ध होता है। हम भौतिक पदार्थों से निर्मित शरीर व जीवात्मा का संयुक्त संगठित रूप है। शरीर में आंख, नाक, कान आदि पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां तथा अन्त: करण में मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार अवयव हैं जो अपना-अपना कार्य करते हैं। शरीर में नाना प्रकार के अन्य महत्त्वपूर्ण अनेक अवयव हैं जो ईश्वरीय सत्ता से संचालित होकर अपने-अपने कार्य को स्वतन्त्रतापूर्वक करते हैं। यह सभी हमारे भौतिक जड़ शरीर के अंग व अवयव है। हमारे इस शरीर में ही एक चेतन तत्व जीवात्मा है जो मन को प्रेरित कर इन्द्रियों के द्वारा ज्ञान व सुख-दु:ख की अनुभूतियों को ग्रहण करता है। आंखों से अच्छे दृश्य भी देखे जाते हैं व बुरे भी तथा कान से विद्या व ज्ञान से सम्बन्धित पवित्र शब्द भी सुने जाते हैं और मन को विकारयुक्त करने वाले बुरे शब्द भी। इस प्रकार से अन्य तीन इन्द्रियों से भी अच्छे व बुरे ज्ञान व अनुभूतियों को ग्रहण किया जाता है जो मनुष्य अपने माता-पिता व आचार्य के द्वारा अथवा सद्ग्रन्थों के द्वारा यह निश्चय कर लेता है कि कभी कोई बुरा कार्य नहीं करना है तो वह उन्नति को प्राप्त होता है और जो बुरे कार्यों को करता है, वह अवनति को प्राप्त करता है। मनुष्य छुप कर बुरे कार्यों को करता है और सोचता है कि मुझे किसी ने नहीं देखा, अत: मुझे दण्ड नहीं मिलेगा परन्तु यह उसकी अज्ञानता व भूल होती है। वह सांसारिक लोगों से भले ही अपने बुरे कार्यों व पापों को छुपा ले, परन्तु इस संसार को बनाने व चलाने वाली तथा जीवात्माओं को शरीरों में संयुक्त करने वाली व जन्म देने वाली सत्ता सर्वान्तर्यामी होने के कारण हर क्षण हमारे समस्त कर्मों को जानती व देखती है। हमारे मन की सभी भावनाएं भी उस सर्वान्तर्यामी सत्ता से छुपी व अविदित नहीं रहतीं। यह सर्वान्तर्यामी सत्ता ईश्वर कर्मफल दाता शक्ति भी है जो यथासमय जन्म-जन्मान्तर में हमें हमारे अच्छे व बुरे कर्मों का न्यायोचित व निष्पक्ष रूप से यथायोग्य जीव-जन्म-योनि व सुख-दु:ख रूप में फल देती है। अत: दु:खों से बचने के लिए जीवात्मा व मनुष्य को एकान्त में भी कोई बुरा विचार व कार्य नहीं करना चाहिए। यदि कोई सुख व उन्नति करना चाहता है तो उसे अपने अन्दर व बाहर से बुरे विचारों से दूर हटा कर ईश्वर का अर्थ ज्ञान सहित नाम स्मरण व वैदिक कर्मों के अनुरूप विद्या व ज्ञान से पूर्ण कर्मों को ही करना चाहिए।

हमारे जड़ व चेतन तत्वों के अन्तर्गत जीवात्मा व प्रकृति की चर्चा की। अब प्रकृति को रूपान्तरित कर इस सृष्टि को बनाने वाली सत्ता तथा सभी प्राणियों को उनके पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर जन्म देने वाले ईश्वर की चर्चा कर लेना भी समीचीन होगा। हम संसार को आंखों से देखते हैं व अपनी सभी इन्द्रियों से इसकी सत्ता का साक्षात् अनुभव करते हैं। यह सत्ता स्वप्नवत् न होकर यथार्थ व सत्य है। सृष्टि में मुख्य रूप से सूर्य, चन्द्र व पृथिवी को लेते हैं। यह तीनों नक्षत्र, ग्रह व उपग्रह स्वयं अपने आप नहीं बने हैं। कोई भी बुद्धि पूर्वक रचना अपने आप कभी नहीं हुआ करती। हमारे घर में आटा, जल, तवा, इंधन व सभी पदार्थ रखे हों तो क्या कभी इनसे रोटी बन सकती है ? कभी नहीं बन सकती। इसी प्रकार से सूक्ष्म प्रकृति से अपने आप सूर्य, चन्द्र आदि नाना प्रकार के उपयोगी व इच्छित पदार्थ स्वयं नहीं बन सकते। इनको बनाने वाला एक रचयिता अवश्य होना आवश्यक है। उस रचयिता को ही ईश्वर कहा जाता है। सृष्टि को बनाना ही उसका प्रथम मुख्य कार्य है। यह सृष्टि उसी के द्वारा बनाने से अस्तित्व में आई है। यदि वह न बनाता तो न बनती। उसने इसे अनायास बिना किसी उद्देश्य के नहीं बनाया ?

रचना का अवश्य कोई न कोई उद्देश्य होता है। सृष्टि रचना का उद्देश्य भी अवश्य है। विचार करने पर, वेदों व वैदिक साहित्य से यह निश्चित होता है कि जीवात्माओं के सुख भोग के लिए ईश्वर द्वारा यह बनाई गई है। बिना सृष्टि व इसके पदार्थों के जीवात्माओं को सुख व दु:खों की प्राप्ति नहीं हो सकती। अत: सृष्टि बनाने का प्रयोजन जीवात्माओं को उनके पूर्व सृष्टि के पाप पुण्यों का फल प्रदान करने अर्थात् सुख व दु:ख प्रदान करने के लिए ईश्वर ने सृष्टि को बनाया है। माता-पिता-आचार्य का कार्य भी अपने पुत्र-पुत्रियों व शिष्यों को अच्छी शिक्षा देना व सुख प्रदान करना ही होता है। माता-पिता को यह शिक्षा ईश्वर की प्रेरणा व वैदिक ज्ञान से ही प्राप्त होती है। जब अल्पज्ञ माता-पिता यह कार्य करते हैं तो ईश्वर जो असंख्य माता-पिताओं व आचार्यों का भी माता-पिता-आचार्य व सर्वज्ञ है, वह सामर्थ्य होने पर भी सृष्टि की रचना, पालन व जीवों के सुख के लिए व्यवस्था क्यों न करेगा ? अत: यह स्पष्ट हो गया कि ईश्वर नाम की एक सत्ता है जिसने जीवों के सुख के लिए सृष्टि की रचना यह ईश्वर कैसा है ? युक्ति, तर्क, बुद्धि व वेद के प्रमाणों से यह सत्य, चेतन, आनन्द से पूर्ण, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर, अभय, सृष्टिकर्त्ता आदि स्वरूप वाला सिद्ध होता है। सत्य का तात्पर्य उसकी सत्ता का होना है तथा चेतन का वर्णन हम पहले कर चुके हैं। चेतन तत्व होने के कारण उसे सुख व दु:ख का ज्ञान होना स्वाभाविक है। उसका आनन्द से युक्त होना आवश्यक है अन्यथा वह कोई कार्य नहीं कर सकता। तर्क व विवेचन से यह ज्ञात होता है कि दु:ख एकदेशी, अल्पज्ञ व परतन्त्र सत्ता को होता है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वेदोक्त ईश्वर की मान्यता

-ले० अभिमन्यु कमार खुल्लर, ग्वालियर

महर्षि दयानन्द इस रोग से मुक्त थे कि विदेश में जाकर धर्म के प्रचार से उनकी अर्न्तराष्ट्रीय छवि बनेगी। अन्तर्राष्ट्रीय छवि बनने के इस लाभ की कल्पना को उन्होंने अपने पास भी नहीं फटकने दिया कि वह भारत में और अधिक पूजनीय बन जाएंगे। वे इस रोग से भी मुक्त थे कि अंग्रेज़ी जानकर, उसमें पर्याप्त भाषण कला का निखार कर, जनसाधारण ही नहीं भारत के बौद्धिक जगत् में भी उनकी धाक जम जाएगी।

पूजनीय बनने व बौद्धिक जगत् में धाक जमाने का लालच उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाया था। तत्कालीन सन्त समाज प्रमुख स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती (वाराणसी) ने कहा था कि दयानन्द! तुम मूर्ति पूजा का विरोध छोड़ दो, हम तुम्हें विष्णु का अवतार घोषित कर, भारत भर में पूजनीय बनवा देंगे। महर्षि 'नकटा सम्प्रदाय' में शामिल होने को तैयार नहीं हुए। नकटा सम्प्रदाय का अभिप्राय समझने के लिए महर्षि का जीवन-चरित पढ़ने का कष्ट करें। ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता आचार्य केशवचन्द्र ने महर्षि से कहा-काश! आप अंग्रेज़ी जानते और मेरे साथ इंग्लैण्ड चलते। आशय उपरोक्त वर्णित उद्देश्यों के अतिरिक्त क्या हो सकता है ? महर्षि ने उत्तर दिया-काश, आप अपनी भाषा में प्रवचन करते तो ज्यादा जनता को समझ में आता पर आप तो उस भाषा (अंग्रेज़ी) में प्रवचन करते हैं जो देश की जनता समझती ही नहीं। सुविज्ञ पाठक जानते हैं कि महर्षि अंग्रेज़ी का अभ्यास कर रहे थे। बम्बई प्रवास में वह प्रतिदिन अंग्रेजी अखबार सुनते थे। उनका अंग्रेजी का अभ्यास मैक्समूलर जैसे विदेशी विद्वानों को सही वेदार्थ समझाने के अतिरिक्त और क्या हो सकता था, जिन्हें वेदार्थ पद्धति का भ्रमित ज्ञान था-महीधर और सायण आदि भाष्यकारों की कृपा से। भारत का चतुर्दिक, सम्यक विकास उनका प्रथम और अंतिम लक्ष्य था। जैसे-जैसे वह प्रचार कार्यक्रम में धंसते चले गए उनका इस लक्ष्यप्राप्ति के लिए आग्रह और प्रबल होता चला गया। यहां तक कि व्यक्तिगत मोक्ष, जिसके लिए उन्होंने गृह त्याग किया था, को भी तिलांजलि दे दी थी। इतना तो लेख की भूमिका समझ लीजिए। बैताल की तरह महर्षि कन्धे पर, मन-मस्तिष्क पर सवार रहते हैं। लेख कहां से प्रारम्भ करने का मन बनाया था, पर हुआ महर्षि से, यही होना था और यही हुआ भी।

पांच-छः महीने पूर्व एक वेद मंत्र दृष्टि में आया था। उसके बाद ध्यान से उतर गया। संस्कृत पढ़ी नहीं है पर विद्वानों की हिन्दी में व्याख्याएं पढ़ लेता हूं, सुन लेता हूं। कुछ दिन से उसे ढूंढने का प्रयास कर रहा था, पर सफलता नहीं मिली। श्रद्धेय शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) को समस्या बताई। उन्होंने वेदमंत्र ही नहीं, उस पर एक लेख लिख कर भेज दिया। मेरे मस्तिष्क में यह बात बार-बार कौंध जाती थी कि इस मंत्र के जानकार होते हुए भी पौराणिक विद्वान् किस तरह विभिन्न ईश्वरों के निर्माण करने में संलग्न रहे और आज भी है। नए ईश्वर गढ़ो, उनके पूजन-अर्चन से प्राप्त लाभों की मार्केटिंग करने के लिए सेल्समैन लगा दो। हलवे-मांडे की दीर्घकालीन व्यवस्था सुनिश्चित है। वैष्णो देवी, गायत्री माता, शिरडी के साईं बाबा, पुट्टपार्थी के साईंबाबा भगवान सब यही तो हैं। ज्यादा कठिन, गूढ़ संस्कृत नहीं है इसलिए मैं मंत्र को प्रस्तुत करता हूं।

यत एतं देवमेकवृतं वेद।
13.4.15

न द्वितीयो, न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते। **13.4.16**

न पन्नचमों न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते। **13.4.17**

ना अष्टमों न नवमो दशमो नाप्युच्यते। **13.4.18**

मुझ जैसे केवल हिन्दी जानने वालों के मानसिक प्रवाह को बनाए रखने के लिए मैंने प्रत्येक मंत्र के अंतिम पद यत एतं वेदमेकवृतं वेद का लोपकार दिया है।

श्रद्धैय उपाध्याय जी के अर्थ को यथावत् रखता हूं। वह अकेला वर्तमान् न दूसरा, न तीसरा व चौथा कहा जाता है। वह न पांचवा न छठा, न सातवां कहा जाता है। वह न आठवां, न नवां, न दसवां ही कहा जाता है। एक से लेकर दस तक की गिनती में समस्त संख्याएं सम्मिलित हो गई। एक से दस तक मस्तिष्क पर हथौड़ा मार-मार कर वेद कह रहा है कि वह एक ही है। क्या अब भी समझ में नहीं आता कि ईश्वर केवल एक ही है। इतने शक्तिशाली ढंग से ईश्वर के एकत्व का महिमा मण्डन कौन सा धर्म करता है-इस्लाम ? वहां तो रसूललिल्लाह मोहम्मद पैगम्बर जुड़े हुए हैं उनको पारकर बायपास कर सीधे अल्लाह के पास नहीं पहुंचा नहीं जा सकता। ईसाईयत? वहां ईसा मसीह के माध्यम से ही पहुंच है। इनकी हमें इतनी ज्यादा चिन्ता नहीं, जितनी भारत में हजारों और नित नए जन्म लेकर परमात्माओं की संख्या वृद्धि करने वालों की है। समस्त भारतीयों को भी हाल ही में मालूम पड़ गया कि बंगला देश में प्रख्यात् 'ढाकेश्वरी' मंदिर है, अब देखना धार्मिक यात्राओं का प्रवाह प्रारम्भ हो जाएगा। यहां के मंदिरों, कब्रगाहों से जिनको लाभ नहीं हुआ वे "ढाकेश्वरी" मंदिर जाएंगे ही। महर्षि ने दिल्ली सरकार के समय एक धार्मिक दरबार भी लगाया था। समस्त उपस्थित धर्माचार्यों से प्रबल आग्रह किया था कि धर्म के मूल सिद्धान्तों पर जिनमें मतभेद नहीं है, हम एक धर्म स्वीकार कर लें। विरोधी तत्वों को भविष्य में समाधान के लिए छोड़ दें तो देशोन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। यह नहीं हुआ, होना भी नहीं था। क्योंकि एक वेदोक्त ईश्वर की मान्यता होने से उनके फूस के महल ढह जाते। आचार्य केशवचन्द्र सेन ने तो विफलता का ठीकरा ही महर्षि के सिर पर फोड़ दिया। महर्षि ने तो देश की एकता के लिए सुदृढ़ आधार रखने के लिए जिन तीन तत्वों का उल्लेख किया है, उनमें धर्म सबसे प्रथम है। देश उनके समय भी पूर्णतया धार्मिक था और आज भी है। कौन धार्मिक एकता के लिए प्रयत्न करे?

पौराणिक विद्वान, साधु संत, मठाधीश, क्या भूलकर भी चाहेंगे कि तिरुपति बालाजी के भगवान्, शिरड़ी के साईंबाबा वाले, पुटपार्थी के साईं बाबा वाले भगवान, सोमनाथ जी, द्वारिकाजी, पुरी, उज्जैन वाले भगवान सब मिलकर एक निराकार, सर्वशक्तिमान भगवान में समा जावे ? बिल्कुल असम्भव ? मुझे आगामी सैंकड़ों-हजारों वर्षों तक संभव नहीं दिखता। इनकी जड़ों में मठा डालने वाला दयानन्द तो 1883 में 59 वर्ष की आयु में ही चला गया। पहला दयानन्द महर्षि जैमिनी के पश्चात् छः हजार वर्ष बाद आया था। दूसरा दयानन्द प्रभु कब भेजेगा? भेजेगा भी या नहीं, कुछ पता नहीं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश कब और क्यों रचा

-ले० पंडित उम्मेद विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

ऋषि दयानन्द जी का जन्म 1824 ई. में हुआ था। वे 1860 में गुरू विरजानन्द जी के पास विद्याध्ययन के लिए पहुंचे। उस समय उनकी आयु 36 वर्ष की थी। 1863 में उन्होंने अपने गुरु से दीक्षा ली और उनके पास से अध्ययन समाप्त कर जीवन क्षेत्र में उतर पड़े। इस समय वे 39-40 वर्ष के हो चुके थे। गुरु विरजानन्द के पास उन्होंने जो कुछ सीखा वही वास्तविक शिक्षा थी क्योंकि इससे पहले वे जो कुछ पढ़ आए थे, उसे विरजानन्द जी ने भुला देने की उनसे प्रतिज्ञा ली थी। इस प्रकार ऋषि दयानन्द जी की यथार्थ शिक्षा 1860 से 1863 तक 3 वर्ष की हुई थी। उन्होंने अपने जीवन काल में जितने व्याख्यान दिए जितने ग्रन्थ लिखे, जितने शास्त्रार्थ किए वह इन तीन साल के अध्ययन का ही परिणाम था। आर्ष और अनार्ष का भेद अपने गुरु से पाया। इन तीन वर्षों के अध्ययन से उनके जीवन उनकी विचारधारा में क्रान्ति उत्पन्न कर दी उससे भारत के पिछले सौ वर्षों का इतिहास बन गया।

इस क्रान्ति का मूल स्रोत उनका ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है। सत्यार्थ प्रकाश 1874 में लिखा गया। मुरादाबाद के राजा जय कृष्णदास जब काशी में डिप्टी कलेक्टर थे तब ऋषि दयानन्द काशी पधारे थे। राजा जयकृष्णदास ने ऋषि से कहा आपके उपदेशामृत से वही व्यक्ति लाभ उठा सकते हैं जो आपके व्याख्यान सुन सकते हैं। जिन्हें आपके व्याख्यान सुनने का अवसर नहीं मिलता उनके लिए आप अपने विचारों को ग्रन्थ के रूप में लिख दें तो जनता का बड़ा उपकार होगा। ग्रन्थ के छपने का भार राजा जयकृष्ण दास ने अपने ऊपर ले लिया। यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश कुल साढ़े तीन महीनों में लिखा गया। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी ने 14 बार पढ़कर कहा कि हर बार पढ़ने से एक नया रत्न हाथ आता है।

सत्यार्थ प्रकाश में 377 ग्रन्थों का हवाला है। इस ग्रन्थ में 1542 वेद मंत्रों व श्लोकों का उद्धाहरण दिया गया है। चारों वेदों, सब ब्राह्मण ग्रन्थ, सब उपनिषद, छन्दों दर्शन, अठारह स्मृति, सब पुराण, सूत्र ग्रन्थ, ग्रह्य सूत्र जैन, बौद्ध ग्रन्थ, बाईबल, कुरान सबका उद्धरण ही नहीं उनका रेफरन्स भी दिया है। इन ग्रन्थ में कौन सामान्य व श्लोक या वाक्य कहां है उसकी संख्या क्या है यह सब कुछ इन साढ़े तीन महीनों में लिखे ग्रन्थों में मिलता है। साधारण ग्रन्थ की बात दूसरी है, सत्यार्थ प्रकाश एक मौलिक विचारों का ग्रन्थ है। ऐसा ग्रन्थ जिसने समाज के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिलाकर रख दिया संसार को झकजोर दिया।

सत्यार्थ प्रकाश चुने हुए क्रान्तिकारी विचारों का खजाना है। ऐसे विचार जिन्हें उस युग में कोई सोच ही नहीं सकता था। समाज की रचना ''जन्म'' के आधार पर न होकर कर्म के आधार पर होनी चाहिए। एक यही विचार इतना क्रान्तिकारी है कि इनसे 90 प्रतिशत समस्याएं हल हो जाती है। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का विचार सत्यार्थ-प्रकाश की ही देन है। सत्यार्थ प्रकाश के 8वें समुल्लास में लिखा है कि कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। जिन समस्याओं को लेकर हम उलझे रहते हैं, हरिजनों की समस्या, स्त्रियों की समस्या, गरीबी की समस्या, शिक्षा की समस्या, देश भाषा की समस्या, चुनाव की समस्या, नियम तथा व्यवस्था की समस्या, गौ रक्षा समस्या, नसबन्दी समस्या, आचार की समस्या आदि ऐसी कौन सी समस्या है जो सत्यार्थ-प्रकाश में नहीं है। आज समाज में जो कुछ अच्छा बुरा हो रहा है सब सत्यार्थ प्रकाश में पहले से ही मौजूद है।

आर्ष और अनार्ष ग्रन्थों का निर्देश सत्यार्थ-प्रकाश में मिलता है। वेदों के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द की दूसरी खोज थी, कि वे वेदों के शब्द रूढ़ि नहीं यौगिक है, मैक्समूलर सायण, उब्वट, महीधर, रांथ, विल्सन, ग्रासमेन आदि विद्वानों ने वेदों के अर्थों को इतिहास परक किया है। वह समय यन्त्रों का था इसलिए भाष्यकार समझते थे कि वेदों अग्नि, वायु, इन्द्र देवता सचमुच स्वर्ग से यज्ञों में पधारते हैं, और दान-दक्षिणा लेकर स्वर्ग में चले जाते हैं। पाश्चात्य विद्वान् कहने लगे कि वैदिक ऋषि जंगली थे, इसलिए अनेक देवताओं को पूजते थे। महर्षि दयानन्द ने इस विचारधारा को ठोकर मारकर गिरा दिया। वेदों से ही उन्होंने सिद्ध किया अग्नि आदि नाम भिन्न-भिन्न देवताओं के नहीं है एक परमेश्वर के ही ये भिन्न-भिन्न नाम है।

ऋषि दयानन्द का कहना था कि वैदिक शब्दों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं आधि भौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक। उदाहरणार्थ इन्द्र का आधिभौतिक अर्थ अग्नि, विद्युत आदि है, आधिदैविक अर्थ, राजा सेनापति, अध्यापक आदि दैवीय गुण वाले व्यक्ति हैं और आध्यात्मिक अर्थ जीवात्मा, परमात्मा आदि है।

इसी प्रकार अन्य शब्दों के विषय में भी कहा जा सकता है। इन कसौटी के सामने रखकर अगर वेदों को समझा जाए तो न उनमें इतिहास मिलता है और न बहुदेवतावाद मिलता है, न जंगलीपन, न विकासवाद मिलता है। वेदों का अर्थ समझने के लिए सदियों से जिस अन्धकार में हम रास्ता टटोल रहे थे, उसमें दयानन्द की दृष्टि ही इस अन्धकार को भेदकर यथार्थ सत्य पर जा पहुंची थी।

19वीं शताब्दी में भारत में अनेक समाज सुधारक हुए। ऋषि दयानन्द राजाराम मोहन राय, केशवचन्द्र सैन, इसी युग की उपज थे, ये सब एक तरफ हिन्दू समाज के पिछड़ेपन को देख रहे थे, दूसरी तरफ पश्चिमी देशों की प्रगतिशीलता को देख रहे थे। यह सब देखकर वे हिन्दू समाज को रूढ़ियों की दासता से मुक्त करना चाहते थे। ऋषि दयानन्द व दूसरों की विचारधारा में भेद यह था कि जहां दूसरे हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दुत्व को ही समाप्त करने पर तुल गए, वहां ऋषि दयानन्द जी ने हिन्दुओं को हिन्दू ही रहते हुए उन्हें नवीनता के रंग में रंग दिया। कोई वृक्ष बिना जड़ के नहीं रह सकता। जड़ कट जाए तो वृक्ष बिना जड़ के नहीं रह सकता। वो वृक्ष गिर जाता है। जड़ को मजबूत बनाकर वृक्ष खड़ा रह सकता है।

कोई समाज अपने भूत के बिना जी नहीं सकता। भूत में पैर जमाकर भविष्य की तरफ बढ़ना, पीछे भी देखना आगे भी देखना यह किसी समाज के जीवन का गुर है। ऋषि दयानन्द जी ने इसी गुर को पकड़ा था पीछे वेदों की तरफ देखो, उसमें जमकर आगे भविष्य की तरफ पग बढ़ाओ। यदि भूत को छोड़ दोगे तो वृक्ष की जड़ कट जाएगी, भविष्य को नहीं देखोगे तो उठ नहीं सकोगे। यही ऋषि दयानन्द जी के सत्यार्थ प्रकाश तथा वेदभाष्य का संदेश है।

लेख का कलेवर वैदिक संस्कृति का सन्देश नामक ग्रन्थ, लेखक प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार से लिया गया है।

स्वामी गंगा गिरि जनता गर्ल्ज कालेज रायकोट में हवन यज्ञ से नए सत्र की शुरुआत

रायकोट क्षेत्र की उच्चकोटि की शिक्षण संस्था स्वामी गंगा गिरि जनता गर्ल्ज कालेज में नए सत्र की शुरुआत प्रिंसीपल डा. मिसिज़ सविता उप्पल जी के योग्य प्रतिनिधित्व में की गई। इस पवित्र अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के उप-प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा जी मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित हुए। पवित्र मन्त्रों के उच्चारण से हवन यज्ञ की शुरुआत हुई और सारा वातावरण हवन की आहुतियों से आनन्दमयी हो गया। मैडम प्रिंसीपल, संगीत विभाग की अध्यापिकाओं और छात्राओं द्वारा असीम परमात्मा के चरणों में अपनी मनमोहक आवाज़ में वन्दना की गई। इस सुरीले भजन की ध्वनि में सारा वातावरण आनन्द विभोर हो उठा। तत्पश्चात् मैडम प्रिंसीपल द्वारा मुख्य मेहमान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा जी उप-प्रधान (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) का स्वागत किया गया। इसके उपरान्त मुख्यातिथि द्वारा विद्या के क्षेत्र में उपलब्धियां प्राप्त करने वाली छात्राओं को पुरस्कार वितरित किए गए। इस मौके पर मुख्यातिथि द्वारा कालेज मैगज़ीन 'कन्या सन्देश' का विमोचन किया गया। छात्राओं को संबोधित करते हुए अन्त में मुख्य मेहमान जी ने उन्हें जीवन में सत्कर्म पर चलते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और आशीर्वाद दिया। अन्त में कालेज प्रबन्धक कमेटी के जनरल सैक्रेटरी श्री राजेन्द्र कौड़ा जी ने आए हुए अतिथिगणों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर कालेज प्रबन्धक कमेटी के उप प्रधान स. जसवंत सिंह खेला एवं डा. मनमोहन भनोट, श्री प्रेम गोयल (खजानची) श्री परविन्दर गोयल (वित्त सैक्रटरी) श्री जयदेव कौड़ा, श्री कुलदीप कौशल, श्री भारत भूषण मेनन, सरदार गुरमेल सिंह, श्रीमती वीरेन्द्र कौर, श्री जतिन्द्र कौर उपस्थित रहे।

-राजेन्द्र कौड़ा

मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया

आर्य कन्या सी. सैकंडरी स्कूल बठिण्डा के प्रांगण में दिनांक 21.7.2015 दिन मंगलवार को हवन यज्ञ करवाया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता, स्टाफ एवम् बच्चे शामिल हुए। रिटायर्ड अध्यापिका श्रीमती अरुणा अरोड़ा ने विज्ञान विषय में प्रथम आने वाली छात्रा सपना पुत्री श्री विनोद कुमार को 1000/- रुपए का नकद ईनाम देकर सम्मानित किया। यह ईनाम कल्पना चावला की याद में हर साल अरोड़ा परिवार की तरफ से दिया जाता है। इस अवसर पर श्री एम. पी. अरोड़ा जी ने 'बेटियों' पर बहुत अच्छी कविता बच्चों को सुनाई। उन्होंने बताया कि बेटियां मां-बाप का गरूर होती हैं। स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने बच्चों को बताया कि जैसे कल्पना चावला का लक्ष्य अन्तरिक्ष में उड़ान भरना तथा बछेन्द्री पाल का लक्ष्य एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचने का था वो उन्होंने पूरी किया वैसे ही बच्चे अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित करें कि तुम्हें क्या बनना है ? अपने लक्ष्य को पाने के लिए सभी मुश्किलों का सामना करना चाहिए। इस समय स्कूल के मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया। मंच संचालन का कार्य श्रीमती चन्द्र कान्ता जी ने किया।

वेद सप्ताह एवं श्रावणी उपाकर्म

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में श्रावणी उपाकर्म एवं वेद सप्ताह का आयोजन 31 अगस्त सोमवार से 6 सितम्बर रविवार तक किया जा रहा है जिसमें चतुर्वेद शतकम् के पवित्र मन्त्रों से विश्व शान्ति यज्ञ व वेदोपदेश व भजनोपदेश भी होंगे। इस अवसर पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्री जगदीश चन्द्र वसु जी के प्रवचन तथा भजन श्रीमती निर्मला वसु जी एवं श्री अरूण शुक्ला जी के भजन होंगे। विश्व शान्ति यज्ञ का संचालन आर्य समाज के पुरोहित पं. रमेश शास्त्री जी करेंगे। आप सभी से विनम्र प्रार्थना है कि इस कार्यक्रम में सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधार कर पुण्यार्जित करें और तन-मन-धन से सहयोग करें।

-मन्त्री आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़

पृष्ठ 4 का शेष-मैं ब्रह्म नहीं अपितु....

ईश्वर मानव के समान शरीर वाला है ही नहीं, अत: उसे कोई दु:ख नहीं होता। अन्य सर्वव्यापक, निराकार आदि सभी विशेषण भी ईश्वर में घटते हैं व तर्क से सत्य सिद्ध होते हैं। यही ईश्वर का सत्य स्वरूप है। अत: ईश्वर की सत्ता भी सत्य सिद्ध है। इस प्रकार से ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति की पृथक-पृथक सताएं सिद्ध होती हैं। ईश्वरीय ज्ञान वेदों में भी इसके प्रमाण पाए जाते हैं। ऋग्वेद के मन्त्र 1/64/20 में इन तीन स्वतन्त्र सत्ताओं का वर्णन है। मन्त्र है 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते। तयोरन्य: पिप्पलं स्वाद्वत्तयनन्नन्योऽभिचाकशीति।। इस ऋग्वेद मन्त्र में स्पष्ट रूप से वृक्ष के रूप में प्रकृति का, पाप-पुण्य रूप फलों का भोग करने वाले के रूप में जीव का और केवल साक्षी रूप में ईश्वर का कथन करके, ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के नित्यत्व का प्रतिपादन किया है। यही मन्त्र मुण्डकोपनिषद् (3-1-1) तथा श्वेताश्वतरोपनिषद् (4-6) में भी उद्धृत कर इन उपनिषदकारों ने वेदानुकूल इन तीनों तत्वों के अनादित्व का उल्लेख किया है। इससे त्रैतवाद का प्रतिपादन वेदानुकूल होने से सत्य व यथार्थ है। जीवात्मा व जीव सत्य, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर, एकदेशी, अल्पज्ञ, समीम व चेतन तत्व है। इन गुणों व कर्म-फलों के कारण ही ईश्वर के द्वारा इसका जन्म-मरण होता रहता है। जन्म-मरण की यह यात्रा मोक्ष पर पहुंच कर समाप्त होती है। मोक्ष के लिए धर्म, अर्थ व काम का अवलम्बन लेना होता है। वेद विहित कर्मों का नाम धर्म व वेद-निषिद्ध कर्मों का नाम अधर्म है। अधर्म से जीव कर्म-फल-बन्धन में फंसता है और धर्म से यह बन्धन ढीला व समाप्त होता है। जीवात्मा व मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र तथा फल भोगने में ईश्वरीय व्यवस्था में पराधीन होता है। जन्म व मरण मनुष्य के अपने वश में नहीं है। माता-पिता भी यह अपनी इच्छा से नहीं चुन सकता। यह इसे इसके कर्मानुसार ईश्वर प्रदान करता है। हमने जड़ प्रकृति की चर्चा की है। यह अपनी मूल कारणावस्था में अत्यन्त सूक्ष्म व सत, रज व तम गुणों वाली होती है।

इन तीन गुणों का संघात प्रकृति कहलाती है। ईश्वर इस प्रकृति से महतत्व बुद्धि, उससे अहंकार, उस से पांच तन्मात्रा, सूक्ष्म भूत और दश इन्द्रियां तथा ग्यारहवां मन की रचना करता है। पांच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पांच भूत, ये कुल चौबीस विकार व रचनाएं और पच्चीसवां पुरुष अर्थात् जीव और छब्बीसवां परमेश्वर है। इनमें से प्रकृति अविकारिणी और महत्तत्व, अहंकार तथा पांच सूक्ष्म भूत प्रकृति का कार्य और इन्द्रियां मन तथा स्थूल भूतों का कारण है। पुरुष न किसी की प्रकृति, उपादन कारण और न किसी हम समझते हैं कि लेख के प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाता है कि मैं व समस्त जीव ब्रह्म अर्थात् ईश्वर नहीं हैं अपितु ईश्वर से भिन्न व पृथक स्वतन्त्र एकदेशी चेतन सताएं हैं। वेदाध्ययन कर वेदाचरण से धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति हमारा उद्देश्य व लक्ष्य हैं। हम निवेदन करते हैं कि वेदों व सदज्ञान की प्राप्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश एक महत्त्वपूर्ण धर्मग्रन्थ हैं। यह वेदों में प्रवेश की कुंजी है। सभी को इसका अध्ययन करना चाहिए। महान विद्वान् पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी ने 130 पूर्व कहा था कि यदि सत्यार्थ प्रकाश का मूल्य एक हजार रुपए भी होता तो भी मैं अपनी समस्त सम्पत्ति बेचकर इस ग्रन्थ को खरीदता और इसे पढ़ता। इसी के साथ लेख को विराम देते हैं।

स्त्री आर्य समाज दाल बाजार द्वारा पुण्य कर्म

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार दाल बाजार लुधियाना द्वारा 1 अगस्त को भाटिया धर्मशाला में एक गरीब कन्या का विवाह कराया गया। स्त्री आर्य समाज की सभी बहनों द्वारा इसमें बढ़ चढ़ कर सहयोग दिया गया। शशि आहुजा, किरन कपूर, बाला गम्भीर, किरन टंडन ने पूरा समय दिया। स्त्री आर्य समाज की प्रधाना ने शगुन का भार अपने ऊपर लिया। आर्य समाज के प्रधान श्री संजीव चड्ढा तथा रमाकान्त महाजन, सुरेन्द्र टंडन, राजेश मरवाहा ने डबल बैड, गद्दे आदि दिए। स्त्री आर्य समाज की कोषाध्यक्ष नीलम थापर ने भी अपना सहयोग दिया। मैं स्त्री आर्य समाज की तरफ से सभी सहयोग देने वाली बहनों और अन्य सहयोगी भाईयों का हार्दिक धन्यवाद करती हूं।

-जनक रानी आर्या मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज

महान् कर्मयोगी स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा वाले) का श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को श्रद्धांजलि देते हुये प्रो. स्वतन्त्र कुमार, आचार्य परम देव जी एवं स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद सीकर वाले। दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को श्रद्धांजलि देने से पूर्व हवन यज्ञ करते हुये चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, आचार्य रामानन्द जी, श्री स्वतंत्र कुमार जी, सी.एल. कोछड़ व अन्य आर्य जन।

महान् कर्मयोगी स्वामी सुमेधानन्द जी (चम्बा वाले) का दिनांक 5 अगस्त 2015 को देहान्त हो गया। उनका श्रद्धांजलि समारोह दिनांक 8 अगस्त 2015 को महर्षि दयानन्द मठ चम्बा में हुआ। स्वामी सुमेधानन्द जी ऋषि परम्परा के सन्यासी थे और उनका आज की परिस्थितियों में हमें छोड़ जाना एक ऐसी रिक्तता पैदा कर गया जिसकी भरपाई नहीं हो सकती। स्वामी सुमेधानन्द जी मां गायत्री के उपासक थे। स्वामी जी ने सन्यास जीवन के 45 वर्षों में शिक्षा स्वास्थ्य, दीन दुखियों की सेवा सहायता के अतिरिक्त चम्बा जैसे दुर्गम स्थान पर अन्धविश्वासों तथा आडम्बरों के विरूद्ध लड़ते रहे। स्वामी सुमेधानन्द जी के श्रद्धांजलि समारोह को यज्ञ द्वारा प्रारम्भ किया गया। दूर-दूर से आए हुए सभी श्रद्धालुओं ने हवन में यज्ञ डालकर स्वामी जी की आत्मिक शांति के लिए प्रार्थना की। स्वामी जी को श्रद्धांजलि देने के लिए राजस्थान सीकर के सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी ने अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी **(चम्बा वाले)** मेरे गुरू भाई थे। उनके चले जाने से आर्य समाज की जो क्षति हुई है उसकी भरपाई नहीं हो सकती। आचार्य रामानन्द जी शिमला वालों ने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे और मैं महामन्त्री था। स्वामी जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश और दयानन्द मठ चम्बा की उन्नति के लिए जो कार्य किए वो हमेशा याद रहेंगे। महात्मा चैतन्यमुनि जी सुन्दरनगर वालों ने श्रद्धांजलि देते कहा कि स्वामी जी बहुत ही नेक दिल और विनम्र व्यक्तित्व के स्वामी थे। उन्होंने हमेशा अपना आशीर्वाद देकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। निर्मात्री सभा से आचार्य परमदेव जी ने श्रद्धांजलि देते हुए स्वामी जी को महान् कर्मयोगी बताया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी ने कहा कि स्वामी जी ने सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार और प्रसार मे लगा दिया। स्वामी जी ने आर्य समाज के संगठन की एकता पर बल दिया और अपने जीवन के अन्तिम समय तक संगठन को एक करने की कोशिश करते रहे। स्वामी सर्वानन्द जी से आशीर्वाद लेकर उन्होंने चम्बा जैसे पहाड़ी क्षेत्र में एक दयानन्द मठ दीनानगर जैसा मठ खड़ा कर दिया। इसके अलावा श्रद्धाजंलि देने वालों में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, स्वामी वेद प्रकाश, श्री जगत वर्मा, डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी के महामन्त्री श्री एस. के. शर्मा, डी.ए.वी. युनिवर्सिटी के रिजनल डायरैक्टर श्री सी.एल. कोछड और श्री रणजीत आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी द्वारा भेजा गया शोक संदेश पढ़ा। आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर से ईश्वर चन्द्र रामपाल व श्री भूपेन्द्र उपाध्याय जी भी श्रद्धाजंलि देने पहुंचे। इसके अलावा दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि प्रान्तों से आए सभा अधिकारी व आर्य समाजों के अधिकारियों ने तथा स्वामी जी के श्रद्धालुओं ने अपनी-अपनी श्रद्धाजंलि अर्पित की। अन्त में आचार्य महावीर जी को पगड़ी बान्धकर दयानन्द मठ चम्बा का कार्यभार सौंप दिया। शान्तिपाठ के साथ श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न हुआ।

–रणजीत आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।

SCANNED
20 AUG 2015
Name.....